

... 21-3-67

रात को दिन बनाई के लिये वाप को आना पड़े संगम पर अभी जन्म तो बच्चे जानते हैं कि वाप आया हुआ है। पहले हम बुढ़ वण के थे। बुढ़बुधी ही थे। वणों वाला चित्र यहाँ पर नहीं है। बच्चे सुनते हैं कि यह चित्र भी मधुवन में होना चाहिये। समझाने के लिये तो यह बहुत अच्छा है। बच्चे जानते हैं कि हम इन वणों में कैसे चक्र लगाते हैं। जो सीसीक बच्चे हैं वो जानते हैं कि मधुवन में यह चित्र नहीं है। तब हीज देना चाहियेगा। यह भी मुख्य चित्र है। बच्चे जानते हैं कि अभी हमको परमपिता परमात्मा ने बुढ़ से ब्राह्मण आकर बनाया है। रूप-2 रूप के संगम युग में हम ब्राह्मण बनते हैं। ब्राह्मणों को पुरूशीतम नहीं कहेंगे। पुरूशीतम तो देवताओं को कहेंगे। ब्राह्मण यहाँ पुरूधियरते हैं पुरूशीतम बनने का। पतित से पावन बनने लिये ही वाप को कुलतें रहते हैं। तो अपने से पूछना चाहिये कि हम पुरूशीतम कहाँ तक बन रहे हैं। इन्डु-टस भी तो पटाई के लिये विचार सागर मथन करते हैं ना। समझते हैं कि इस पटाई से हम यह करेंगे। तुम बच्चों की बुधी में है कि अभी हम ब्राह्मण बन रहे हैं देवता बनने के लिये। यह है अमूल्य जीवन क्यों कि तुम ईश्वर का सतान हो। ईश्वर तुमको राजयोग सिखा रहे है। पतित से पावन बना रहे है। पावन देवता बनना है ना। तुम बच्चे जानते हो कि रूप-2 हम ब्राह्मण बन कर फिर देवता बनते हैं। वणों पर भी समझाना बहुत अच्छा है। सन्यासी आद इन बातों पर नहीं ठहरेंगे। वाकी ही 84जन्म का हिस्सा तो समझ भी सकते है। यह भी समझ सकते है कि हम सन्यास भी वाले 84जन्म नहीं लेते है। इस्लामी बोदी आद भी समझेंगे कि हम भी 84जन्म नहीं लेते है। ही पुनजन्म लेते हैं पस्तु कम। तुम्हारे समझाने से ब्रह्म समझ जावेंगे। समझाने की भी युक्ति चाहिये। तुम बच्चे यहाँ सम्भव बैठे हो तो वावा बुधी को रिपेश करते रहते है। जैसे और बच्चे भी यही आते है रिपेश होने लिये। तुमको तो रोज वाप रिपेश करते है कि यही घटना करो। बुधी में यही खयाल चलती रहे कि हम कैसे 84जन्म लेते है। कैसे फिर बुढ़ से ब्राह्मण बनते है। ब्रह्मा की सतान ब्राह्मण। अब ब्राह्मण कहाँ से आवे। वाप बैठे समझाते है कि हम दादा का नाम ब्रह्मा रखते है। यह जो भी ब्र, कु, कु है तो वो सब फंमली हो गई। तो जरूर रेड्याप्ट हो गये ना। वाप ही रेड्याप्ट करते है। उनको वाप ही कहा जाता है दादा नहीं कहा जाता है। वाप को वाप ही कहा जाता है। मिलकिसत मिलती ही वाप से है। कोई तो चाचा मामा काका कादरी वाले भी रेड्याप्ट करते है। जैसे वावा ने सुनाया था ना कि एक बच्ची किररे के डिव्वे में पड़ी थी वो कोई ने उठा कर कोई को गौद में दी क्यों कि उनको अपना बच्चा नहीं था। तो बच्ची जिनकी गौद में गई तो उन्ही को मा-वाप कहने लग पड़ेगी ना। यहाँ फिर है वेहद की बात। तुम बच्चे भी जैसे कि वेहद के किररे के डिव्वे में ही पड़े हुये थे। क्य वक्त्रणी नदी में पड़े हुये थे। कात्य में किररा ही तो है ना। कितने गन्दे हुये पड़े है। बाबा अनुसार वाप ने आकर इस किररे के डिव्वे से निकाला है। और तुमको रेड्याप्ट किया है। तब प्रथान को किररा ही तो कहेंगे ना। आसुरी गुण वाले मनुष्य है। देहअभिमानकम किर... यह बच्चे विकार है ना। तो तुम रावण के बच्चे रिपयूज में पड़े हुये थे। तुम वास्तव में तो रिपयूजी भी ही। अब वेहद के वाप की आकर शरण ली है। रिपयूज से निकल कर गुल-गुल देवता बनने। इस समय सारी दुनिया रिपयूज के बच्चे डिव्वे में पड़ी हुई है। वाप आकर तुम बच्चों को किररे से निकाल कर अपना बनाते है। पस्तु किररे का रहना ऐसा छिले हुये है जो कि निकालो फिर भी किररा ही अच्छा लगता है। वाप आकर वेहद के किररे से निकलते है। कुलतें भी है कि वावा आकर हमकी गुल-गुल बनाओ। कांटो के जंगल से निकल कर फूल बनाओ। खुदाई वगीचे में बिठो। अभी तो असुरों के जंगल में पड़े है। वाप तुम बच्चों को वाप में ले जाते है। बुढ़ से हम ब्राह्मण बन है फिर देवता करेंगे। यह देवताओं की राजधानी है। ब्राह्मणों की राजधानी है नहीं। श्ल तुम्हारा पाण्डव नाम है पस्तु पाण्डवी को राजाई नहीं है। राबई प्राप्त करने लिये ही वाप के साथ बैठे हो। वेहद की रात पूरी होकर अब वेहद का दिन शुरू होता है। गीत

... 21-3-67

शुभम विधान 106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000

सुनाने कोन आया सक्के... आते हे रात को बिठा कर दिन बनाने। अर्थात् स्वर्ग की स्थापना नके व विनशा
करने। यह भी वुषी में रहे तो भी रक्की हो। वुषी में ही ना होने कारण रक्की ही नहीं होती है। तो क्व
आसुरी स्वभाव दिवाते है। जिस यज्ञ से ही इतना बनते है उस यज्ञ को तो बहुत मिल से सेवा करनी
होती है। इडिडिया भी इस में दे देनी चाहिये। अपने को देवना चाहिये। क जो चलने चलते है उससे हम
उंच पद पा सक्के। विसमन्न कचे तो नहीं है ना। समन्न सक्के है कि राजा कैसे प्रजा कैसे बनती है। वावा
ने रथ भी बनववी ही लिया है जो कि राजाओं आद को भी अच्छी रीती जानते है। राजाओं के तो दास
दासियों को भी बहुत रक्की अमिलता है। वो तो राजाओं के साथ ही रहती है। परन्तु कहलावेगी तो दासी।
सुरव तो है ना। जो राजावानी रवावे वो ही उनको मिले। बाकी बाहर बाहे थोड़े रवा सक्के थे। दासियों
में भी नम्बरवार होती है कोई तो शंगर करने वाली कोई कर्वा को सम्भालने वाली। कोई मीरु फिर द्वाइ
आकलगने वाली। यहां के राजाओं को ही इतनी दास-दासिया थी तो वहां तो कितनी ही देर हाँगी। सव
पर रूग-2 अपनी-2 चलि होती है। रहने का स्थान अलग होगा वो कोई मंजल की तरह सजाया हुआ
नहीं होगा। जैसे कि सक्कटस कुवाटर होते है ना। अकर आवेगे जरूर परन्तु रहना तो सक्कटस कुवाटरी
में ही होगा ना। तो वाप अच्छी रीती समझाते है कि अ पने पर ही रहम की कि हम उंच ते उंच बने।
हम अभी ब्रह्म से ब्राह्मण बने है सो भी अहोसौभाग्य। फिर देवता बनेंगे। यह संगम युग तो बहुत ही क
क्याण करी है। तुम्हारी हर बात में क्याण करा हुआ है। अण्डरों में भी योग में रह कर भोजन बनावे
तो भी बहुतों का क्याण है। श्रीनाथ दवारों पर भोजन बनाते है क्लिकल ही शान्त में रह कर। श्रीनाथ ही
याद रहता है। भक्त अपनी भक्ति में ही बहुत मस्त रहते है। तुम्हारे फिर ज्ञान में मस्त रहना है। कृष्ण
की ऐसे भक्ति होती है जो कि वापस मत पूछो। कृष्णवन में दो वदिय्यां है परीभक्त है। कहती है क्स
हम यहां ही रहेगी। कृष्ण की ही याद में। उनको बहुत कहते है कि अछा मकान में चल कर रहो। ज्ञान
लो। बोलती है हम तो यहां ही रहेगी। तो इसके कहेंगे भक्त शिरोमणी। कृष्ण पर कितनी क्लहर जाती
है। अभी तुम्हारे बोलहार जानो है वाप पर। पहली-2 शुरु में शिव वावा कितने बलिहार गये। देर के देर
आये। जब भारत में आये सो बहुतों को अपना हार याद आने लगा। कितने ही चले गये। 250 आये थे।
वाकी 75 रह गये है। वाकी सब-चले गये। वो भी लिड्ट निकल कर देवनी चाहिये। वावा के पास
तो क्लाल वुषी है नहीं जो कि क्व के दे सैक। गुहचरी तो बहुतों पर ही आती है ना। क्व क्वसी हंसा
क्व क्वसी हंसा बैठती है। वावा ने समझाया है क्व भी आते है तो पूछो क्वी आये ही? चर में चंडि
देवा ब्र. कुं. कु. का। तो यह तो परिवार ही गया ना। एक है निराकर परमपिता परमात्मा। दूसरा
फिर प्रजा पिता ब्रह्मा भी गाया हुआ है। हम सब उसके कचे है। डांडा है शिव वावा। वसी उनसे मिलता
है। वो यज्ञ देते है कि मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। कृष्ण पहले भी ऐसे राय दी
है। कितनी उंच पहाई है। यह भी तुम्हारी वुषी में है कि हम वाप से वसी ले रहे है। हमको देवता
बनना है। तो जरूर में में देकी गुण भी होने चाहिये। देवतायें कितना थोड़ा रवाते है। उनमें को हक्का
थोड़े रहती है। 36 प्रकार भोजन बनाते थे। रवाते वो कितना जा थे। रवान-पान की हवश रवना इसके
भी आसुरी ही चलन कहा जाता है। देवीगुण धारण करने है तो रवान-पान क्वा शुरु और साधन होना
चाहिये। परन्तु भाया ऐसी है जो कि एकदम पत्थर वुषी बना देती है। फिर तो पर भी ऐसा ही मिलेगा।
वाप कहते है अपना क्याण करने देवी गुण पास करी। अच्छी रीती पढ़ेंगे और पढ़ावेंगे तो तुम्हारे ही
वजीपना मिलेगा। वावा नहीं देते है। तुम आप ही अपने ही पुरुषार्थ से पती हो। अपने को देवना
चाहिये कि क्व तक हम सर्विस करते है। हम क्या बनेंगे? इसी का मस. शरीर छूट जावे तो हम क्या पर
पावेंगे? वावा से कोई पूछे तो वावा ब्रह्म बतावे। पि. कसे बताया जाता है कि फलाना पद पावेंगी। पुरुषार्थ

ही नहीं करते है तो कप-कपान्तर लिये ही अपने को घाटा डालते है। अच्छी सविस करने वाले जरूर अच्छे पद पावेंगे। अंदर में घंटा रहता है बिच्यह दास-दासियां जाकर वनेगी। बाहर से कह नहीं सकते है। स्थूल में भी इडुइन्ट समझ सकते है कि सीनियर वनेंगे वां जूनियर। फिर यहाँ पर भी ऐसे ही है। जूनियर कम पद पावेंगे। शाहकृतों में भी सीनियर और जूनियर होंगे। दास-दासियों में भी सीनियर और जूनियर होंगे। सीनियर वालों का दर्जा ऊंचा होता है। ^{महार} हाइ लगाने वाली दासी को कब अंदर जाने का हुक्म नहीं होता है। इन सभी बातों को अभी ही समझ सकते है। पिछाड़ी में तो और भी अच्छी रीती सीखा जावेंगे। उंच करने वालों का फिर रिगाडि भी रखना पड़ता है। जैसे देवो कुमारका ठ तो वो सीनियर है है तो उनका रिगाडि भी रखना चाहिये। महाराष्ट्रियों का रिगाडि नहीं रखते है तो अपने ऊपर पापों का बोझा चढ़ाते है। यह सब बातें वाप ध्यान में देते है। बहुत बकवदारी चाहिये। नम्बरवार किसका रिगाडि कैसे रखा जाता है यह भी कोई नहीं जानते है। समझते नहीं है कि यह हमारे से ऊंच है हमको उनका रिगाडि रखना चाहिये। कोई तो मैनस सीखते ही नहीं है। सुझना ही जैसे कि मुक्कल है। गारंटी करके आये है कि हम सुरंगे नहीं। वावा तो हर एक को जानते है ना। किसीको सीधा कह तो देकर वनने में देरी नहीं करें। फिर कुमारियों माताओं आद पर भी कपन आ जाते है। सितम फिर उनको सहन करने पड़ते है। बहुत करके माताये ही लिखती है कि वावा हमको बहुत तंग करते है। हम इस कबन से फिस छूटे? पुस्त्य तो कोई ऐकर-वैकर होगा जो कि कहेंगा जबकि अंदर में दिल होती है बाहर से आकर कहेंगे वावा हमको शादी के लिये बहुत तंग करते है हम क्या करें। ओ तुम कोई जनाकर थोड़े-ई हो जो कि जकड़ती करें। अंदर में दिल ही रही है तब ही पूछते हो कि क्या करें? तो वावा भी कहेंगे अच्छा भल शादी करी। तुम रह नहीं सकेंगे। इसमें तो पूछने की भी बात नहीं रहती है। जीवना अपना ही मित्र है अपना ही शत्रु है। जो चाहेंगे सो ही करो। पूछना माना कि दिल है। मुख्य बात है याद की। याद से ही तुम पावन बनते हो। यह ल-न नम्बरवन पावन है ना। मर्मा कितनी सविस करती थी। ऐसे तो कोई कह नहीं सकते है कि हम मर्मा से होशियार है। मर्मा ज्ञान में सबसे तीव्री थी। बाकी रहां योग। योग में कमजोर होते है तो फिर प्रोगना भी धोनी पड़ती है। करण तो होता है ना। वृषी से यह समझने की बात है। योग से ही विक्रम विनाश हो और विक्रम विनाश होते है। और सतोप्रधान बन सकते है। योग की कमजोरी थी। भल हुआ कह कर शान्त हो जाते है फिर भी करण क्वाया जाता है। योग की कमी थी। जन्म-जमान्तर का बोझा तो सिर पर ही है ना। तो ऐसा ही पटि बन गया। यो तो समझते थे कि अन्न में मर्मा रहेगी वावा चलें जावेंगे। परन्तु हुआ में ही कुछ और था और ही और हो गई। योग की कमी बहुतों में है। याद में रह नहीं सकते है। वावा अपने लिये भी बताते है वास-2 भूल जाता है। बाकी, क्चों की बातें साधने आ जाती है तो याद भूल जाते है। यह भी कमी समझते है। फिर उसके लिये सुवपुत्राधि करते है। भक्ति में श्रीवृषी नहीं ठहरती थी तो अपने को चिडंटी पहनते है। फिर यह खयाल आता है कि वावा की याद ही नहीं आती रहेगी तो अपने को चिडंटी पहनेगे याद ही नहीं करेंगे तो विक्रम विनाश कैसे होंगे? लां कहता है कि पिछाड़ी में याद में बैठे-2 ही शरीर छोड़ना है। शिव वावा की याद में है प्राप तन से निकले। एक वाप केवना और कोई की याद नहीं करें। कहीं भी आश्रित नहीं हो। यह प्रैक्टिस करनी होती है। हम तो नगे ही आये है फिर नगे ही जन्म है। क्चों को वास-2 समझते रहते है कि बहुत पीठा बनना है। देवीगुण भी होंने चाहिये। देहअधियान का भूत होता है ना। अपने पर बहुत ध्यान रखना है। बहुत ध्यान से चलना है। वाप को याद करना है और चक्र को याद करना है। चक्र का राज तो किसी समझाओं तो भी वफर ख खवे। 84वे जन्म कोई को याद नहीं रहते है तो 84खरवों को कैसे याद कर सकेंगे। खयाल में भी आ नहीं सकता है। इस चक्र को ही याद रखनी तो भी अहोसीधाम्य। अभी तो नाटक परा होता है काग पर-2 होना चाहिये। ओ